Research Paper Literature

''कुरुक्षेत्र'' में निहित दिनकर का युद्ध दर्शन और आज का युग

"Kurukshetra" Me Nihit Dinkar Ka Yuddh Darshan Aur Aaj Ka Yug

* Dr. Madhulika

* Assistant Professor, Hindi Department, CRM JAT PG College, Hisar, Hariyana

Keywords :

वर्तमान समय में हमारा विश्व हथियारों के जखीरे पर बैठा है। ऐसे–ऐसे घातक परमाणु हथियारों का जखीरा खड़ा हो गया है, जिनसे सम्पूर्ण विश्व अनेक बार नष्ट किया जा सकता है। आज हर व्यक्ति तनावयुक्त शान्ति व्याप्त है। सामान्यतः दो पक्षों में होने वाली लड़ाई को युद्ध की संज्ञा दी जाती है, लेकिन वर्तमान समय में ऐसा युद्ध नहीं बल्कि तनावयुक्त युद्ध है। अर्थात् यह तनाव कभी भी युद्ध का रूप धारण कर सकता है। दिनकर ने ''कुरुक्षेत्र'' नामक काव्य में युद्ध समस्या पर गहन चिन्तन किया है और इस समस्या को प्रतीकों के द्वारा स्पष्ट करना चाहा है। क्योंकि उन्होंने युद्ध की समस्या को नए और विस्तृत धरातल पर देखा है, उनकी सोच अपने–आप में नव्यता लिए हुए है। कवि ने युद्ध को मानव कृत्यों के साथ जोड़कर विवेचित किया है।

द्वितीय विश्व युद्ध में पहली बार परमाणु बम्बों के रूप में इस संसार ने और दिनकर जी ने विज्ञान के विनाशक प्रयोग को देखा था और इससे वे आहत हो गये थे। इसी कारण उन्हें आधुनिक मानव को सावधान करते हुए कहा–

सावधान, मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,

तो इसे दे फैंक, तज पर मोह, स्मृति के पार।[1]

इन पंक्तियों के माध्यम से दिनकर जी आधुनिक विश्व को भी आगाह करते हैं कि विश्व को घातक हथियारों की दौड़ से दूर रहना चाहिए। भीष्म के मुख से कवि कहलवाते भी हैं–

मैं भी हूं सोचता, जगत से,

कैसे उठे जिघांस,

किस प्रकार फैले पृथ्वी पर,

करुणा, प्रेम, अहिंसा।[2]

जब द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो गया था और जापान पर गिराये गये परमाणु बम्बों की विनाशलीला विश्व के सामने आई तो विश्व को यह आभास हुआ कि यह सब किसी न किसी दिन फिर हो सकता है। इसी अज्ञात भय के कारण कवि दिनकर भी विश्व को विज्ञान को मोह त्यागने को कहता है –

हो चुका है सिद्ध, तू शिशु अभी नादान,

फूल–काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान,

खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,

काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।[3]

दिनकर की नजर में युद्ध का परिणाम किसी भी सूरत में लाभदायक नहीं हो सकता। यह सब विश्व ने जापान के दो शहरों की हुई दुर्गति से देख भी लिया था। यही भाव युद्धिष्ठिर के हैं –

किन्तु इस विध्वंस के उपरान्त भी,

शेष क्या है, व्यंग्य ही तो भाग्य का?

चाहता था प्राप्त मैं करना जिसे,

तत्व वह करगत हुआ या उड़ गया।[4]

महाभारत के युद्ध के बाद हुए विनाश को देखकर युधिष्ठिर के मन में आत्म–ग्लानि का भाव उठता है और वह कह उठता है–

यह महाभारत वृथा, निष्फल हुआ,

उफ, ज्वलित जितना गरलमय व्यंग्य है?

पाँच की असहिष्णु नर के द्वेष से,

हो गया संहार पूरे देश का।[5]

यहाँ युधिष्ठिर की आत्म–ग्लानि से कवि यही सिद्ध कर रहे हैं कि युद्ध का परिणाम हमेशा ही दुःखदायी होता है। चाहे इसमें कोई जीते या हारे, लेकिन परिणाम निराशा भरा ही होगा। आगे युधिष्ठिर का कहना है कि युद्ध के परिणाम को अगर वे जानते तो वह युद्ध कभी नहीं लड़ता और दुर्योधन को प्यार से जीतता। इतना होने पर भी यदि दुर्योधन नहीं मानता तो मैं भीख मांग लेता–

जानता कहीं जो परिणाम महाभारत का,

तन बल छोड़ मैं मनोबल से लड़ता।[6]

अर्थात् यहाँ दिनकर विश्व को समझाना चाहते हैं कि युद्ध किसी भी समस्या का अन्तिम परिणाम नहीं होता, बल्कि समस्याओं को अन्य शान्तिपूर्वक तरीकों से भी हल किया जा सकता है।

आज विज्ञान और बुद्धि के बल पर मानव ने परमाणु की सत्ता पर भी विजय पा ली है। यह क्रमशः विकास की ओर अग्रसर है, लेकिन क्या उसे अपनी इस यात्रा का लक्ष्य उद्देश्य और अर्थ का पता है? यदि आज के विश्व को यह पता नहीं है तो उसकी सारी तकनीकी, सारे परमाणु हथियार बेकार हैं। दिनकर भी विश्व को यही लक्ष्यहीनता को आरेखित करते हुए लिखते हैं–

चीरता परमाणु की सता असीम, अज्ञेय,

बुद्धि के पवमान में उड़ता हुआ असहाय,

जो रहा तू किस दिशा की ओर निरुपाय?

लक्ष्य क्या, उद्देश्य क्या, क्या अर्थ?

यह नहीं यदि ज्ञात, तो विज्ञान का श्रम व्यर्थ।[7]

दिनकर जी आधुनिक वैज्ञानिक तकनीक और विज्ञान द्वारा हो रहे विनाश को वास्तविक प्रगति नहीं मानते। विज्ञान शक्ति तो दे सकता है, लेकिन आदमी उस शक्ति का उपयोग किस उद्देश्य से करे, यह महत्वपूर्ण है, न कि विज्ञान की प्रगति। दिनकर तो यह चाहते हैं कि मानव चाहे कितना ही प्रगतिशील हो जाए, आकाश–पाताल नाप ले, लेकिन विश्व शान्ति के बिना फिर भी मानवता अधूरी ही रह जाएगी। कवि की स्पष्ट धारा है कि विज्ञान तभी अपने उद्देश्य में सफल होगा जब उसके केन्द्र में मानव होगा, मानवता होगी। दिनकर जी ने लिखा भी है –

रसवती भू के मनुज का श्रेय,

यह नहीं विज्ञान कटु, आग्नेय।

श्रेय उसका प्रा में बहती प्रणय की वायु

मानवों के हेतु अर्पित मानवों की आयु।[8]

कवि कहता है कि मनुष्य का कर्तव्य मनुष्य से प्रेम करना है और जो मनुष्य एक–दूसरे के मध्य की खाई को पाट दे, वास्तव में वही मानव कहलाते का हक रखता है। अर्थात् विश्व चाहे कितनी ही प्रगति कर ले, कितनी ही तकनीकी विकसित कर ले, लेकिन जब तक उसके पास समता रूपी, सद्‌भावना रूपी, विश्वमैत्री रूपी मानव नहीं है, तब तक वह व्यर्थ है। कवि ने लिखा भी है–

श्रेय उसकी बुद्धि पर चैतन्य उर की जीत,

श्रेय मानव की असीमित मानवों से प्रीत।[9]

अन्त में दिनकर जी भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि –

साम्य की वह रश्मि स्निग्ध, उदार

कब खिलेगी, कब खिलेगी विश्व में भगवान?

कब सुकोमल ज्योति से अभिसिक्त,

हो, सरस होंगे जली, सूखी रसा के प्राण।[10]

यहाँ कवि को उस दिन का इंतजार है जब सम्पूर्ण विश्व में समता की वह स्निग्ध, उदार रश्मि खिलेगी और शुद्ध व पवित्र रोशनी चारों तरफ व्याप्त होगी।

अतः दिनकर ने विज्ञान को पूर्ण रूप से विनाशक माना है, क्योंकि कवि की नजर में मानव–विज्ञान के सामने शिशु है। अतः विश्व को सोच–समझकर विज्ञान का प्रयोग करना चाहिए। यद्यपि कुछ आलोचक दिनकर की युद्ध सम्बन्धी सोच को देखते हुए उन पर युद्ध समर्थक होने का आरोप भी लगाते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। उन्होंने युद्ध का समर्थन तभी किया है जब शोषक सब कुछ छीनकर शोषित व्यक्ति को दीनता व कायरता का पर्याय बना दे। ऐसी अवस्था में ही दिनकर ने युद्ध का समर्थन किया है। अन्यथा कवि तो ऐसे दिन का इंतजार कर रहे हैं जब सम्पूर्ण विश्व युद्ध के भय से युक्त होगा।

REFERENCES

1- jke/kkjh flag fnudj] dq#{ks=] i`0 83 | 2- jke/kkjh flag fnudj] dq#{ks=] i`0 32 | 3- ogh] i`0 83 | 4- jke/kkjh flag fnudj] dq#{ks=] i`0 9 | 5- ogh i`0 16 | 6- ogh i`0 12 | 7- jke/kkjh flag fnudj] dq#{ks=] i`0 86 | 8- ogh i`0 83 | 9- jke/kkjh flag fnudj] dq#{ks=] i`0 82 | 10- ogh i`0 29 |